International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 2, Mar.-Apr, 2024, Impact Factor: 8.376

रामायण में नारी की भूमिका

डॉ. प्रियंका

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, महारानी किशोरी मेमोरियल कन्या महाविद्यालय, होडल, जिला-पलवल

भारत और अन्य देशों में रामायण के असंख्य संस्करण हैं और इन संस्करणों की असंख्य व्याख्याएँ हैं। इनमें से कई लोकप्रिय संस्करणों ने, पाठ के रूप में और मंच और टेलीविजन पर चित्रण दोनों में, लोगों के बीच महाकाव्य के अधिकांश प्रमुख पात्रों की गहरी छाप छोड़ी है। यहां तक कि कुछ छोटे पात्र और उनकी कहानियां भी हमारे दिमाग में ज्वलंत कल्पनाएं पैदा करती हैं और हम उनके व्यक्तित्वों के बजाय रूढ़िवादी रेखाचित्र चित्रित करते हैं जिन्हें हम समय के साथ निश्चित मानते हैं और स्वीकार करते हैं।

ऋषि वाल्मिकी द्वारा कुछ प्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन न केवल जिस तरह से प्रस्तुत किया गया है वह आश्चर्यजनक है, बल्कि यह पात्रों की सूक्ष्म बारीकियों और उनके सामाजिक-राजनीतिक ढांचे के साथ-साथ उनकी पारस्परिक गतिशीलता को भी स्पष्ट रूप से सामने लाता है। रामायण के बारे में आमतौर पर महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में बात नहीं की जाती है और महाकाव्य में कई उदाहरणों को आमतौर पर पितृसत्ता के चश्मे से देखा जाता है। हालाँकि, वाल्मिकी एक विपरीत तस्वीर प्रस्तुत करते हैं और अयोध्याकाण्ड और अरण्यकाण्ड में वर्णित कुछ उदाहरण महिलाओं की स्थिति और प्रभाव के बारे में प्रबुद्ध दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

रामायण, सामाजिक समरसता के साथ रामराज्य की परिकल्पना को पूर्ण करती है। सामाजिक सद्भाव का महत्व बताने के लिए राम ने हर वर्ग को जोड़ा, समाज में मर्यादा बनी रहे इसलिए राम, त्रिभूवन नाथ होकर भी, संत, महात्माओं के आगे नतमस्तक हुए, छोटे -बड़े सभी को यथायोग्य सम्मान दिया,राम के अलावा और कौन मर्यादा का सर्वोत्तम उदाहरण हो सकता है! रामायण प्रेरित करती है, सामाजिक जीवन में लोकाचार को,अनुशासित, सच्चरित्र और नीतियुक्त बनाने के लिए क्योंकि समाज, हमारे ही व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है। समाज निर्माण में जितना पुरुष का योगदान है उतना ही स्त्री का। भारतीय संस्कृति, आधुनिक मानस तथा समाज शास्त्र में भी यह स्वीकारोक्ति है कि समाज के निर्माण में स्त्रियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि स्त्री न केवल जन्मदात्री होती है बल्कि संतति को निडर, संस्कारी, राष्ट्रभक्ति के साथ नैतिक गुण भी प्रदान करती है। रामायण मे भी सभ्य समाज के निर्माण का संदेश है ओर इस ग्रंथ में भी एक नहीं अनेक ऐसी महान विदुषी नारियों का उल्लेख है जो हमारी संस्कृति की रीढ़ को सदृढ़ बनाती है, जिनकी विद्धमानता ही रामायण जैसे धार्मिक ग्रंथ को गौरवान्वित करती है।

रामायण की एक और विशेषता यह है कि इसमें वर्णित सभी नारी पात्र चाहे वह मानव हों या दानव उनका चरित्र स्तुत्य है। रामायण में राम की भांति ही, नारी भूमिका की समस्त पात्रों का मर्यादाशील आचरण वर्णित है जो वर्तमान की उन्मुक्त, स्वच्छंद, भ्रमित आधुनिक नारी और दिशा हीन समाज को,भारतीय संस्कृति और सभ्यता से परिचित करवाता है। रामायण युगीन नारी की विशिष्टता यह है कि उनके अंतःकरण में आर्यावर्त की संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा है। वह समयानुसार अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के साथ ही रामायण की कथा को अपने दायित्वनुसार आदर्श रूप में सुशोभित करती हैं।

महिलाओं का आभार प्रकट करने के लिए हर साल 8 मार्च को महिला दिवस मनाया जाता है। इस दिन को मनाने के पीछे एक कारण और है वह है महिलाओं का सम्मान। हम सभी को हर उस स्त्री का सम्मान करना चाहिए जो राष्ट्र, समाज और परिवार लिए समर्पित हैं। ऐसी महिलाओं के कई उदाहण हमें धार्मिक ग्रंथों और पुराणों में मिलते हैं।

सीताजी के सतीत्व के आगे हारा रावण:

आरंभ से लेकर अंत तक सीताजी की सभी बातें पवित्र और आर्दश हैं। माता सीता के सतीत्व के प्रभाव के कारण उनका अपहरण करने वाला असुर रावण भी उनका कुछ अहित नहीं कर पाया था। उनके सतीत्व के प्रभाव के कारण रावण उन्हें अशोक वाटिका में बंदी बनाने के बाद भी कभी उनके समीप जाने का साहस नहीं कर पाया। जब लंकापति रावण सीताजी के सामने शादी का प्रस्ताव लेकर पहुंचा तो देवी सीता ने लंका के विनाश की बात कही थी। उन्होंने अपने हाथों में एक तिनका लेकर रावण को भयभीत कर दिया था।

मातृत्व की मिसाल देवी सीता:

सीताजी को जगत माता कहा जाता है और कहें भी तो क्यों न उन्होंने अयोध्या से निकाले जाने के बाद भी अपना धैर्य और साहस कम नहीं होने दिया। इन्होंने महर्षि बाल्मिकि के आश्रम में रहकर अपने दोनों पुत्रों लव और कुश को जन्म दिया। वन में साधन की कमी के बावजूद इन्होंने अपने पुत्रों में संस्कार और विद्या प्रदान किया। अकेले अपने दम पर इन्होंने अपने पुत्रों को ऐसा बनाया कि एक समय दोनों बालकों ने पूरी अयोध्या की सेना को पराजित कर दिया था।

देवी सीता का बल और पराक्रम:

रामायण में देवी सीता के बचपन की कथा मिलती है कि इन्होंने बाल्यावस्था में ही भगवान शिव के धनुष को एक हाथ से उठा लिया था। यह वही धनुष था जिसे उठाने देवी सीता के स्वयंवर में बड़े-बड़े सूरमा और पराक्रमी पहुंचे थे। लेकिन भगवान राम के अलावा कोई उसे टस से मस तक नहीं कर पाया था।

देवी सीता का त्याग और धर्म:

देवी सीता ने मानव इतिहास में त्याग और धर्म की वह मिसाल कायम की है कि युगों युगों तक इनका बखान लोग करते रहेंगे। इन्होंने पत्नी धर्म को निभाने के लिए राजसी सुखों का त्याग करके वन-वन भटकना स्वीकार किया। देवी सीता के अपने सत्य धर्म का ऐसा पालन किया कि इनके एक बुलावे पर धरती माता स्वयं प्रकट हो गईं और इन्हें अपने साथ सशरीर मृत्युलोक से लेकर चली गईं। इतिहास में देवी सीता के अलावा ऐसा त्याग धर्म किसी का नहीं दिखता है।

रामायण की प्रत्येक महिला पात्र, नारी गुणधर्म की सकारात्मक व नकारात्मक मनोदशा को अपने चारित्र्य अनुसार प्रकट करती हैं जिसमें सबसे प्रमुख पात्र सीता, कैकेयी, मंथरा, शूर्पणखा और मंदोदरी न होतीं तो रामायण का स्वरूप ही भिन्न होता। तुलसी रामायण और वाल्मीकि रामायण में इन पांच नारियों की महती भूमिका है।

छद्म नारीवाद का समर्थन करती आधुनिक नारियों के लिए प्रेरणात्मक बातें...

1. सीता:-

सीता का संपूर्ण जीवन धरती के समान धैर्य,त्याग और तपस्या का पर्याय बना।स्वामी विवेकानंद के अनुसार भारतीय नारियों को जैसा होना चाहिए, सीता उसका आदर्श रूप हैं।सीता, मन,वचन और कर्म से अपने पति में अनुरक्त हैं।श्रीराम के हर सुख-दुख की अनुगामिनी,विषम परिस्थितियों में भी अपने पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली देवी सीता, आदर्श बेटी, आदर्श पत्नी, आदर्श माँ,और बहु का उत्कृष्ट रूप हैं।आधुनिक नारी जो मात्र आर्थिक रूप से सक्षम हो जाने पर ही निरंकुश हो,अमर्यादित आचरण कर अपने कुल और परिवार का मान नहीं रख पाती,परिवार, रिश्ते, ओर विवाह जैसे पवित्र बंधन के महत्त्व समझ पाने में असमर्थ हैं,उनके लिए सीता का जीवन प्रेरणादाई है।

2. कैकेयी:-

बिना इस पात्र के रामायण अपूर्ण होती।कोई स्वपन में भी विचार नहीं कर सकता था कि राम पर असीम ममता लुटने वाली माता ही उनके लिए चुनौती बन जाएगी! कैकयी का चरित्र यह शिक्षा देता है कि अगर हठ और स्वार्थ नियंत्रण हीन हो जाए तो वह परिवार और समाज के लिए अहितकारी हो जाता है।कैकयी का पश्चाताप यह सिद्ध करता है कि किसी दुरबुद्धि, अविवेकी व्यक्ति के बहकावे में आकर आपका अनुचित हठ आपके साथ दूसरों को प्रताड़ित तो करता ही है, किसी के प्राण भी ले सकता है इसलिए कुसंगती से बचें।

3. मंथरा:-

ईर्ष्यालु, कपटी स्त्री, रामायण की एक महत्वपूर्ण और कदाचित सबसे घृणित पात्र मानी जाती है। जितनी कैकयी और भरत से प्रीति उतनी ही श्रीराम से अप्रीति। बुराई, अच्छाई पर ऐसी हावी होती है कि बुद्धि को भ्रष्ट कर देती है। रानी कैकयी विदुषी नारी थी फिर भी, मंथरा उसके उद्देश्य में सफल हो जाती है क्योंकि स्वार्थ एक ऐसी वृत्ति है जो मानव चित्त को विचलित कर देती है मंथरा उसी वृत्ति का नाम है।मंथरा जैसी वृत्ति, कभी सही सलाह नहीं दे सकती, ऐसी स्त्रियों से दूर रहना चाहिए।

4. शूर्पणखा:-

शूर्पणखा,उन्मुक्त,व्यभिचारी,विकृत मानसिकता युक्त स्त्री अगर आज की स्वच्छंद नारी की तुलना इससे की जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी बस इतना ही अंतर होगा की वह राक्षसी थी। ऐसी स्त्री जो एक पुरुष से अस्वीकृत होकर दूसरे के पास जाती है और अपनी नाक कटवा बैठती है, इस विचार को पुष्ट करती है कि सदाचारी पुरुष और सभ्य समाज कभी ऐसी स्त्री का सम्मान नहीं करते। नाक को सम्मान का प्रतीक माना जाता है वह नाक कटवा कर समाज में चरित्रहीन कहलाती है। शूर्पणखा ने निरंतर अपने भयावह व्यक्तित्व को बरकरार रखा है जो हमें आज भी निरंकुश, लज्जाहीन नारियों में दिख सकती है। जबकि सीता ने भक्ति,त्याग और पतिव्रत गुणों के कारण अपनी पूजनीय स्थिति यथावत रखी है।

5. मंदोदरी:-

मंदोदरी, रूपमती,विदुषी, नारी जो रावण को भी सलाह देती थी। सीता हरण पश्चात भी उसने रावण को कई बार समझाया था कि श्रीराम कोई साधारण मानव नहीं हैं उनसे शत्रुता उचित नहीं।वह चाहे तो अब भी काल की दिशा को मोड़ सकता है,लंका और नगरवासियों की महा विनाश से रक्षा कर सकता है परंतु अहंकारी रावण बात न मानकर सम्पूर्ण राक्षस कुल के विनाश का कारण बन बैठा। मंदोदरी की ही भांति हर पत्नी का यह धर्म होना चाहिए की वह पति को कुमार्ग से सदमार्ग पर लाकर पत्नी धर्म निभाएं और पति को भी पत्नी से परामर्श अवश्य लेना चाहिए क्योंकि पत्नी से उत्तम कोई मित्र नहीं होता।

दो ऐसे दिलचस्प उदाहरण है। जो आम तौर पर मानी या समझी जाने वाली बातों की तुलना में पूरी तरह से अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

सबसे पहले, स्वभाव से स्वार्थी और अन्यायी होने के बावजूद, कैकेयी की इच्छाओं को सम्राट दशरथ और राम दोनों ने बरकरार रखा, जिन्होंने परिणामों की परवाह किए बिना, उनसे किए गए वादों को पूरा करने की आवश्यकता पर बहुत दृढ़ता से जोर दिया। ये सभी वरदान उसे दशरथ द्वारा युद्ध के दौरान की गई सहायता के पुरस्कार के रूप में दिए गए थे।

लेकिन इससे भी अधिक उल्लेखनीय बात इस सन्दर्भ में सीता के सन्दर्भ में एक और प्रसंग है।
जब राम को वनवास मिला और वे राजगुरु सीता के साथ अयोध्या छोड़ने वाले थे, तो ऋषि वशिष्ठ ने क्रोध में रानी कैकेयी को यह कहते हुए डांटा कि उन्होंने शालीनता की सभी सीमाएं लांघ दी हैं और उनका व्यवहार मानकों (धार्मिकता) के अनुरूप नहीं है और निम्नलिखित कहते हैं:

न गन्तव्यं वनं देव्य सीतया शीलवर्जिते।
अनुष्ठास्यति रामस्य सीता प्रकृत्मासनम्।।
"हे नारी (सभी) मर्यादाओं के प्रति मर गई! राजकुमारी सीता वन में नहीं जाएंगी।
यहीं रहकर वह उस सिंहासन पर बैठेंगी जो राम को दिया गया था।" (स्रोतः श्रीमद् वाल्मिकी रामायण, गीता प्रेस, गोरखपुर प्रकाशन)
ऋषि वशिष्ठ आगे कहते हैं:

आत्मा हि दरससर्वेषां दरसङ्ग्रहवर्तिनाम्।
आत्मेयमिति रामस्य पलयिष्यति मेदिनीम्।।
"सभी गृहस्वामियों के लिए एक पत्नी ही स्वयं होती है। राम की (अन्य) आत्मा के रूप में, वह विश्व पर शासन करेंगी।" **(स्रोतः श्रीमद् वाल्मिकी रामायण, गीता प्रेस, गोरखपुर प्रकाशन)**

ऋषि वशिष्ठ की ओर से दिए गए ये सशक्त कथन थे और काफी अधिकार के साथ दिए गए थे। इसलिए, राजघराने और समाज दोनों ही सीता के सिंहासन पर कब्ज़ा करने के विचार के लिए खुले थे, अगर वह ऐसा चाहती होती। इसके अलावा, इसका मतलब यह भी था कि सीता को शासक बनने के लिए प्रशिक्षण दिया गया होगा, क्योंकि सिंहासन के लिए पुरुष उत्तराधिकारियों के लिए भी यह एक महत्वपूर्ण शर्त थी।

निश्चित रूप से सीता ने राम के साथ वन में जाने का निर्णय लिया। ऋषि वाल्मिकी ने सुंदरकांड में वर्णित हनुमान के विचारों के माध्यम से रामायण की सभी बाद की घटनाओं पर उनके प्रभाव को खूबसूरती से संक्षेप में प्रस्तुत किया है, जब उन्होंने पहली बार सीता को देखा था। हनुमान अपने आप से कहते हैं कि वास्तव में इसी सीता के कारण जनस्थान के चौदह हजार राक्षसों को उनके सेनापतियों खर, त्रिशिरा और दूषण सहित राम ने मार डाला था और राक्षस विराध को भी मार डाला था। उसके लिए कबंध को मार डाला गया और बाद में, वालि को भी राम ने मार डाला। उनके कारण ही सुग्रीव को किष्किंधा का सिंहासन और सभी वानरों का शासक प्राप्त हुआ। और वह अकेली ही उसके समुद्र पार छलांग लगाने और लंका पहुंचने का कारण बनी। **(स्रोत: श्रीमद् वाल्मिकी रामायण के सुंदरकांड के सोलहवें अध्याय के श्लोक 7-12 का सारांशित पुनरुत्पादन , गीता प्रेस, गोरखपुर प्रकाशन)**

राम के हाथों रावण और उसकी सेना का अंतिम विनाश और वध सीता द्वारा किया गया था।
अरण्यकांड में, वाल्मिकी एक और दिलचस्प पहलू पर प्रकाश डालते हैं - महिलाओं का, विशेष रूप से शाही वंश से संबंधित लोगों का - शासन कला और शासन सहित शास्त्रों में अच्छी तरह से पारंगत होना।

शूर्पणखा से जुड़ा उदाहरण बहुत दिलचस्प है और विचार के लिए अवसर प्रदान करता है।
सुर्पनखा को आम तौर पर लोकप्रिय मीडिया में भयानक रूप वाली एक राक्षस-महिला के रूप में चित्रित किया जाता है, जो रावण से शिकायत करती है कि राम और लक्ष्मण ने उसके साथ कितना बुरा व्यवहार किया और दो राजकुमारों द्वारा अपने अपमान का बदला लेने के लिए उसे सीता का अपहरण करने के लिए उकसाया।

हालाँकि वह रावण को सीता का अपहरण करने के लिए उकसाती है, लेकिन वाल्मिकी रामायण में जो बहुत दिलचस्प है वह वह तरीका है जिससे वह उसे ऐसा करने के लिए मनाती है। यह महज एक बहन द्वारा अपने भाई से की गई भावनात्मक अपील नहीं है। वह जो तर्क प्रस्तुत करती है वह शासन कला और प्रशासन के गहन ज्ञान को दर्शाता है। इससे भी अधिक उल्लेखनीय बात यह है कि वह राम द्वारा उत्पन्न खतरे के जवाब में रावण को उसकी 'निष्क्रियता' के बारे में, उसके सभी मंत्रियों और सलाहकारों के सामने, बहुत साहसपूर्वक और बिना शब्दों को कहे डांटती है!

अरण्यकांड (अध्याय 33) का एक पूरा अध्याय रावण को दिए गए उनके भाषण को समर्पित है, जो एक राजा के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों और कानून और व्यवस्था के प्रबंधन की बारीकियों और उसके क्षेत्रों की सुरक्षा पर केंद्रित है।

एक शासक की जिम्मेदारियों के बारे में बोलते हुए, वह कहती है कि एक राजा जो व्यक्तिगत रूप से अपने मामलों में शामिल नहीं होता है, वह निस्संदेह अपने राज्य के साथ-साथ उन मामलों को भी बर्बाद कर देता है। एक अयोग्य शासक की दुर्दशा का वर्णन करते हुए, वह कहती है कि जिस तरह हाथी कीचड़ भरी नदी से दूर रहते हैं, उसी तरह लोग उस राजा से दूरी बनाए रखेंगे जो जासूसों को नियुक्त नहीं करता है, अपने लोगों को मौका नहीं देता है और स्वतंत्र नहीं है। वह आगे कहती हैं कि वे मनुष्य शासक जो किसी ऐसे क्षेत्र पर कब्ज़ा नहीं करते, जो अब उनके नियंत्रण में नहीं है, वे समुद्र में डूबे हुए पहाड़ों की तुलना में समृद्धि से अधिक चमकते नहीं हैं। (स्रोत: अरण्यकांड के तैंतीसवें अध्याय के श्लोक 4-6 का सारांशित **पुनरुत्पादन [श्रीमद् वाल्मिकी रामायण, गीता प्रेस, गोरखपुर प्रकाशन एवं श्लोक एवं अनुवाद | वाल्मिकी रामायणम (iitk.ac.in)**

तर्क की यह पंक्ति उस व्यक्ति की नहीं हो सकती जो शासन को नहीं समझता है या जिसे ऐसे विषयों पर बहस और चर्चा करने का पूर्व अनुभव नहीं है।

शूर्पणखा ने भी लापरवाही से रावण के राजा बने रहने की क्षमता पर सवाल उठाते हुए कहा:
त्वन्तु बालस्वभावश्च बुद्धिहीनश्च राक्षस।
ज्ञातव्यन्तु न ज्ञातिषे कथं राजा भविष्यसि।।
"तुम निस्संदेह बचकाने स्वभाव के और बुद्धि से रहित हो और नहीं जानते कि क्या जानना चाहिए, हे राक्षस! (फिर) आप राजा कैसे बने रहेंगे?" **(स्रोत: श्रीमद् वाल्मिकी रामायण, गीता प्रेस, गोरखपुर प्रकाशन)**

अपनी बात को स्पष्ट करते हुए वह बताती है कि एक शासक को किस चीज़ से सावधान रहना चाहिए और कैसे कार्य करना चाहिए। वह अपने राज्य से निष्कासित राजा को बेकार कहती है, भले ही वह योग्य हो, कपड़े के टुकड़े के समान जिसे पहना जाता है और त्याग दिया जाता है और माला के समान होता है जिसे उपयोग किया जाता है और कुचल दिया जाता है।

एक सम्मानित शासक के गुणों के बारे में वह कहती हैं कि जो राजा सतर्क रहता है, सब कुछ (अपने और अपने शत्रु के बारे में) जानता है, जिसकी इंद्रियाँ पूरी तरह से नियंत्रित होती हैं, जो दूसरों की सेवाओं को पहचानता है और स्वभाव से पवित्र होता है वह लंबे समय तक अपने सिंहासन पर बना रहता है. वह आगे कहती हैं कि जो राजा विवेकशील रहता है और जिसका क्रोध और उपकार दंड और पुरस्कार के रूप में प्रकट होता है, उसका प्रजा द्वारा सम्मान किया जाता है। **(स्रोत: अरण्यकांड के तैंतीसवें अध्याय के श्लोक 19-21 का सारांशित पुनरुत्पादन [श्रीमद् वाल्मिकी रामायण, गीता प्रेस, गोरखपुर प्रकाशन एवं श्लोक एवं अनुवाद | वाल्मिकी रामायणम् (iitk.ac.in))**

शूर्पणखा ने अंतत: रावण को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि वह इन सभी गुणों से पूरी तरह से वंचित है और उसे चेतावनी दी कि यदि वह उन परिस्थितियों की वास्तविकताओं को नजरअंदाज करना जारी रखता है, जिनका वे सामना कर रहे हैं, तो वह अपनी संप्रभुता खो देगा और जल्द ही नष्ट हो जाएगा। अपनी ओर से, रावण अपने दरबार में उसके आगमन से पहले की घटनाओं के बारे में उससे और पूछताछ करने से पहले चुपचाप उसके शब्दों पर विचार करता है।

यह काफी दिलचस्प कहानी है कि ऐसे समाज में भी (जैसे कि राक्षसों का), जहां 'ताकत सही थी', शूर्पणखा खुद को खुलकर और सार्वजनिक रूप से व्यक्त कर सकती थी और अपने सर्वशक्तिमान भाई रावण के सामने अपनी बात रख सकती थी। राजा। ऋषि वाल्मिकी ने शूर्पणखा जैसे चरित्र को भी प्रस्तुत करने का निर्णय लिया, जिसकी महाकाव्य में अपेक्षाकृत क्षणभंगुर होते हुए भी प्रभावशाली उपस्थिति है, इतनी गहराई के साथ यह बताता है कि रामायण पूरे उपमहाद्वीप और दुनिया भर में, समाज के सभी वर्गों के बीच क्यों गूंजती है।

भले ही रामायण के बाद के संस्करणों में कहानी में महिलाओं की स्थिति के संबंध में अनजाने में अपने समय के सामाजिक-राजनीतिक प्रभावों (यानी, जब उनकी रचना की गई थी) को शामिल किया गया हो, ऋषि वाल्मिकी ने अपनी रामायण में जिन समाजों का चित्रण किया है - यह मनुष्यों, वानर या यहां तक कि राक्षसों की भी है - इसमें मजबूत महिलाएं थीं जो घटनाओं को प्रभावित करती थीं, अपनी बात रखती थीं और पुरुषों को उपयोगी सलाह भी देती थीं।

एक-आयामी परिप्रेक्ष्य से दूर, उन्होंने महाकाव्य को इस तरह से प्रस्तुत किया है जो घटनाओं और पात्रों की अधिक स्तरित समझ की मांग करता है। पात्रों और उनकी भूमिकाओं को पूर्व-निर्धारित आख्यानों और विचारों में विभाजित करने की कोशिश करना बहुत भ्रामक हो सकता है, जबकि यह इतिहास के सार से दूर ले जाता है।

बालि की पत्नी तारा रावण की पत्नी मंदोदरी और श्रीराम की पत्नी सीता इन तीन प्रमुख स्त्री पात्रों और बाल्मीकि रामायण में वर्णित अन्य स्त्रियों के संदर्भ का विश्लेषण यह स्थापित करता है कि स्त्रियों के विचार और उनका परामर्श पुरुषों और विशेष रूप से उनके पतियों के लिए महत्वपूर्ण थे। वे उनके परामर्श को विशेष महत्व देते थे। बाल्मीकि रामायण के संदर्भ यह बताते हैं कि रामायण काल से ही भारतीय समाज में महिलाओं के विचार और उनके परामर्श महत्वपूर्ण थे। साथ ही उनके वैवाहिक संबंध में स्त्रियों का समान महत्व था। यह बातें मुंबई विश्वविद्यालय के मिथलोजी डिपार्टमेंट के प्राध्यापक तथा प्रसिद्ध इतिहास विश्लेषक उत्कर्ष पटेल ने कहीं। उन्होंने सबसे पहले बालि की पत्नी तारा के संदर्भ में कहा कि जब सुग्रीव हारने के बाद फिर बालि को ललकारने लगे तब तारा ने बालि को युद्ध करने से मना किया। उसने कहा कि आखिर हारने के बाद जो ललकार रहा है तो अवश्य ही कोई सहयोग उसे मिल रहा होगा।

उसके साथ वे दो राजपुत्र भी हैं अवश्य कुछ गड़बड़ है। पटेल ने रावण की पत्नी मंदोदरी के संदर्भ में कहा कि मंदोदरी ने भी हमेशा अपने पति को उचित सलाह दी। वह रावण जैसे शक्तिशाली से भयभीत नहीं होती थीं। सीता हरण को लेकर उन्होंने रावण को समझाने के साथ ही उसकी बलशीलता को भी चुनौती दी थी। सीता के संदर्भ में उन्होंने यह स्पष्ट किया कि बाल्मीकि रामायण सहित अनेक प्रसंग और स्थापित धारणाएं दोनों में बहुत अंतर है। स्थापित धारणा यह है कि सीता भगवान राम की हर बात का बिना प्रतिवाद किए अनुसरण करती थीं, जबकि आज धर्मग्रंथ का स्थान पा चुकी बाल्मीकि रामायण तुलसीकृत रामचरित मानस सहित लगभग तीन सौ से अधिक रामकथाओं के संदर्भ ऐसी धारणाओं के विपरीत हैं। वनगमन प्रसंग से ही यह स्पष्ट है कि श्री राम ने सीता को अयोध्या में ही रहने को कहा था। बाल्मीकि रामायण में 18 श्लोक उनके इसी प्रसंग के हैं। बाल्मीकि रामायण में ही अग्नि परीक्षा के दोनों प्रसंग उनके आत्मसम्मान के द्योतक हैं। सभी संदर्भों में यह बात भी ध्यान रखनी चाहिए कि आज की स्त्री ना तो सीता है और ना ही आज का पुरुष राम।

रामायण संपूर्ण मानवता की ऐसी अद्भुत सांस्कृतिक धरोहर है जिससे प्रेरणा लेकर हम भी आदर्श समाज को स्थापित कर सकते हैं। समाज जब एकजुट होता है तो कितनी भी बड़ी बुराई हो,उसे झुकना ही पड़ता है। सीधे शब्दों में कहा जाए तो संगठन में ही शक्ति है। भारत के किसी भी कालखंड पर दृष्टि डालिए, प्रत्येक पृष्ठ पर, किसी न किसी महान स्त्री की वीरता,उनकी पवित्रता दृष्टिगत होती है। स्वामी विवेकानंद के शब्दो में,स्त्री में ऐसे कई श्रेष्ठ गुण होते हैं जो पुरुष को अपना लेना चाहिए। प्रेम, सेवा, उदारता, समर्पण और क्षमा की भावना और यही समस्त गुण दिशाहीन समाज को भी सही मार्ग पर लाने का सामर्थ्य रहते हैं।

सन्दर्भ सूची

[1]. इंटरनेट, मीडिया, पत्र पत्रिकाएं, सम्पादकीय लेख

[2]. श्रीमद् वाल्मिकी रामायण, गीता प्रेस, गोरखपुर प्रकाशन एवं श्लोक एवं अनुवाद

[3]. श्रीमद् वाल्मिकी रामायण के सुंदरकांड के सोलहवें अध्याय के श्लोक